" चतुरसेन शास्त्री

शीर्षक — दुखवाँ मैं कासे कहूँ मोरी सजनी।

पात्र → बादशाह
— सलीमा
— जीतनमहल

इस कहानी में बादशाह और सलीमा दोनों पति-पत्नी है। इस कहानी के तीन पात्र हैं बादशाह सलीमा और सलीमा के माईके के नौकर जो बंदी के रूप में बादशाह के यहाँ काम करते थे।

कहानी यह है कि बादशाह की नई बेगम ~~उसके साथ~~ उसके साथ सैर करने के लिए कश्मीर जाती है। बादशाह आनन्द मनाने के लिए बाजारु औरत के कोठे पे जाते हैं। एक दिन ऐसा होता है कि जीतनमहल के यहाँ गए तो लौटने में कई दिन हो गए। सलीमा इन्तजार करती रही है। उसके माईके के वह नौकर जो औरत बनकर बंदी के रूप मे वहाँ नौकरी कर रहा था सिर्फ सलीमा को देखते रहना। रात में सेवा करते-करते, सलीमा को शराब पिया दिया। उसके मुँह को चुम रहा था कि उसी समय बादशाह आ जाते हैं। जान-जाने के डर से नौकर कबूल कर लेता है। वह एक नौकर है। उसे तहखाने मे डाल दिया जाता है। राजा जीतनमहल वापस लौट आता है।

सलीमा बेहोश पड़ी सभी बातों को देखकर सुबह नींद खुलती है तो उसे यह सूचना मिलती है कि उसे कैद कर लिया गया।

Hindi Hanours

शीर्षक —

बादशाह को चिट्ठी भेजती है। चिट्ठी वापस आ जाती है, और वो निराश होकर आत्म हत्या की तैयारी करती है। मरने के पूर्व ही चिट्ठी छोड़ जाती है। बेहोश सलीमा को देखकर लोग चिट्ठी लेकर बादशाह के पास दौड़ता है। बादशाह तुरंत उपस्थित होता है। सलीमा नराजगी का कारण पूछती है तो वह बताता है कि एक मर्द तुम्हारा चुम्बन कर रहा था। सलीमा खुदा की कसम खाती है कि उसे यह सब कुछ पता नहीं है। वह अपनी ~~सजा~~ सजा स्वीकार करती है। बादशाह व्याकुल हो जाता जाता है।

सलीमा को प्यार करने लगता है। सलीमा अपने जीवन धन्य समझने लगती है। मरने से पहले यही प्रार्थना करती है कि उस युवक को माफ कर दिया जाय। सलीमा की मृत्यु हो जाती है। बादशाह बहुत दु:खी हो जाता है। उस युवक को बंदीगृह से निकाला जाता है। बादशाह के सामने वह स्वीकार करता है कि सलीमा का कोई कसूर नहीं है। सलीमा को सामने मे दफन कर दिया जाता है। बादशाह यहीं पर उसकी कब्र को निहारते थे। उन्हें ऐसा लगता है कि कोई गा रहा है —

"दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी"

कहानी यहीं समाप्त हो जाती है।

Balaw
[signature]